सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रकाशन संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

बालदिवस पर विशेष

नन्हें मुन्ने बच्चे हम ...

विष्णुगुप्त 'विजिगीषु'

नन्हें – मुन्ने बच्चे हम सब, भारत की सन्तान है।
हम भविष्य हैं, प्रिय स्वदेश के, हम ही हिन्दुस्थान हैं।।

कोई भी नादान न समझे, शेरों के संग खेले हैं।
हाथ डालकर मुँह में उनके, गिनते दाँत अकेले हैं।।
पवन पुत्र हम हनुमान हैं, लव – कुश जैसे वीर हैं।
सौ योजन तक मार गिराऊँ, हम राघव के तीर हैं,
हम भारत के सिंह–शूर हैं, रघुनन्दन श्री राम है।
हम भविष्य हैं प्रिय स्वदेश के, हम ही हिन्दुस्थान हैं।।

छोटे होने से क्या होता, सूरज मुख में धरते हैं।
नन्ददुलारे बन उँगली पर, गोवर्धन भी रखते हैं,
नाग नाथकर सिर पर उसके, पग रख नाचा करते हैं।
सिंहासन से खींच धरा पर, कंस बदारा करते हैं,
हम ही मोहन–चक्र सुदर्शन, वंशीघर घनश्याम हैं।
हम भविष्य है प्रिय स्वदेश के, हम ही हिन्दुस्थान हैं।।

होनहार भारत के बेटे, वीर बाँकुरे प्यारे हैं,
राणा की सन्तान सभी हम, वीर शिवा से न्यारे हैं,
वीर हकीकत – गोरा बादल, गोविन्द की सन्तान हैं,
देश–धर्म पर हँस–हँसकर हम, हो जाते बलिदान हैं,
हम बिस्मिल, आजाद,भगतसिंह, वीर सुभाष महान हैं,
हम भविष्य हैं प्रिय स्वदेश के, हम ही हिन्दुस्थान हैं,

●शाहजहाँपुर, (उ.प्र.)